पर्यावरण के समाजशास्त्रीय एवं मानवीय पहलुओं का मूल्यांकन

डॉ0 (श्रीमती) अर्चना कुशवाहा,

प्रोफेसर–समाजशास्त्र विभाग,
शासकीय कमला राजा कन्या स्वशासी स्नातकोत्तर,
महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.)

मानव जीवन का सम्पूर्ण बजूद पर्यावरण पर आधारित है, या यह कहें कि पर्यावरण मानव जीवन का आधार है। जहाँ पर्यावरण का सन्तुलन विकास मार्ग की प्रकृति को प्रशस्त करता है,वहीं पर्यावरण का असन्तुलन व्यक्ति ही नही समूचे समाज और मानव संसाधनों के विनाश का प्रमुख कारण बन जाता है। यह एक ऐतिहासिक व कटु सत्य है कि प्रकृति में जो जीवित व निर्जीव वस्तुएँ हैं वे सभी पर्यावरण से बाहरी तह तक जुड़ी हुई हैं और उनके अभिन्न अंग हैं। पर्यावरण असन्तुलन के पीछे परिस्थितिजन्य असन्तुलन प्रमुख कारण है। कारखानों की चिमनियों से निकलने वाले धुँए में तरह–तरह की विषाक्त गैसें होती हैं जो दिन–रात साफ हवा को दूषित करती हैं। दूसरी ओर कारखानों से निरन्तर बाहर आने वाला कचरा जिसमें तरह–तरह के घातक रसायनों एवं खनिजों आदि के अंश होते हैं,जल श्रोतों से मिलकर उन्हें गन्दा कर रहे हैं। अगर हम किसी वर्ष का सही अवलोकन करें तो यह नही पायेगें कि बीता वर्ष पर्यावरणीय दृष्टि से भरा था। प्राकृतिक आपदाओं, ग्लोबल वार्मिंग के बढतें खतरे की दहशत से डरी दुनिया इससे मुक्ति की सम्भावनाओं को जरूर टटोलती नजर आयेगी । बढती जनसंख्या,घटते वन, प्रदूषित होती हवा और पीने का पानी का अभाव जैसी समस्याओं ने विश्व पर्यावरण को गहरे संकट में डाल दिया है। आधुनिक समय में राष्ट्रों ने अणु बमों, हाइड्रोजन बमों के ढेर लगा लिये हैं। इनके बढते रहने से ये दुनिया के अस्तित्व और पर्यावरण दोनों के लिए खतरा बनते जा रहे हैं। प्राकृतिक सम्पदा की प्रचुरता की संस्कृति हमारे सामने है। अभाव का दौर मनुष्य के हिंसा का कारण बनता जा रहा है। इसे हम यूं समझ सकते हैं कि आज ओजोन की छतरी की सुरक्षा पृथ्वी पर सांस लेने वाले जीव –जगत की सुरक्षा है, उसमें छेद होने का अर्थ है कि मानव जाति और और पूरे जीव–जगत के लिये खतरा पैदा हो सकता है।

मनुष्य अपने पर्यावरण की उपज है। प्रत्येक मनुष्य अपने चारों ओर की अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, आर्थिक, जैविकीय और जनसंख्यात्मक परिस्थितियों से प्रभावित होता रहता है। पर्यावरण उन सभी दशाओं का योग है जिन्होने प्राणी के जीवन को प्रभावित किया है और कर रही है। शाब्दिक रूप से पर्यावरण दो शब्दों से मिलकार बना है 'परि''आवरण' 'परि' का अर्थ है 'चारों ओर' और आवरण का अर्थ है 'ढॅके हुए। पर्यावरण का तात्पर्य उन सभी दशाओं और परिस्थितियों की सम्पूर्णता से है जो एक प्राणी के जीवन को चारों ओर से घेरे हुए है। पर्यावरण का भौतिक पक्ष उतना ही महत्वपूर्ण है जितना उसका मानवीय एवं समाजशास्त्रीय पक्ष, प्राकृतिक पक्ष–जैसे–वायु, जल, तापमान, भूमि की बनावट, खनिज पदार्थ तथा आद्रता आदि आयाम जितने महत्वपूर्ण हैं उसी प्रकार पर्यावरण का सामाजिक पक्ष जैसे–सामाजिक ढाँचा, सामाजिक संस्थाएँ, सामाजिक नियम, सांस्कृतिक विरासत तथा विभिन्न प्रकार के समूह आदि भी जीवन पद्धति

को निर्धारित करते हैं–इसके अतिरिक्त अनेक सांस्कृतिक प्रतिमान, जैसे–धर्म, भाषा, नैतिकता, प्रथा, परम्परा, आविश्कार, सामाजिक मूल्य तथा लोकाचार आदि भी हमारे जीवन के पर्यावरणीय भाग को प्रभावित करते हैं। इन सभी प्राकृतिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक दशाओं की सम्पूर्णता को ही हम 'पर्यावरण' कहते हैं। रॉस (Ross) के अनुसार,[1] ''पर्यावरण कोई भी वह बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।"" जिस्बर्ट (Gisber) का कथन है,[2] –'पर्यावरण वह सब कुछ है जो किसी वस्तु को तात्कालिक रूप से चारों ओर से घेरे हुए है और उसे प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।''

पर्यावरण का मानवीय पक्ष इतना महत्वपूर्ण हो गया कि इस सन्दर्श को केन्द्र में रखकर ही पर्यावरण का विवेचन समीचीन लगती है सम्पूर्ण पर्यावारण 'मनुष्य के अनुभव में एक जटिल सम्पूर्णता' है (complex totally in man's experience)[3] व्यक्ति के चारों ओर अनेक प्रकार की परिस्थितियाँ हैं जिनका अनुभव उसे एक सामाजिक प्राणी के रूप में होता है। ''समाजशास्त्र का विद्यार्थी होने के नाते सम्पूर्ण पर्यावरण से हमारा तात्पर्य उस 'सब कुछ' से है जिसका एक मनुष्य अनुभव करता है अर्थात् सम्पूर्ण पर्यावरण का तात्पर्य ऐसे घेरे से है जिसका निर्माण करने में व्यक्ति सक्रिय रहता है तथा स्वयं भी उससे प्रभावित होता है।''[4]

सामाजिक पर्यावरण जो समाज वैज्ञानिकों का प्रारम्भ से ही मूल विषय रहा है, जीव विज्ञानियों की धरोहर बन गया। प्रकृति के सुरम्य गोद में बसे गांव पहले प्रायः प्रदूषित नहीं होते रहे, लेकिन आज गांवों का पर्यावरण प्रदूषित होता जा रहा है। गांवों में मकान बनाने के लिये ग्रामवासियों ने जो ईट भट्टे विकसित किये हैं, उससे पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। गांवों में भी जल प्रदूषण की समस्या हमारे सामने आ रही है, गांव की नहरों, ताल–तालाबों के साथ–साथ वहां के भूमिगत जल स्रोत (हैण्डपम्प, कुंए) भी प्रदूषण से ग्रसित होते जा रहे हैं।

पर्यावरण अब विश्व में सर्वाधिक चर्चा का विषय बन गया है। मानव ने अपनी इच्छा को पूरा करने के लिए प्राकृतिक सन्तुलन को नष्ट कर दिया है। जिसके परिणाम स्वरूप नवीन समस्यायें सामने आ गयी हैं। प्रदूषण या प्राकृतिक असन्तुलन का जैसे–जैसे फैलाव हो रहा है। वैसे ही सेमीनारों, संगोष्ठियों, तथा अन्य प्रचार माध्यमों द्वारा विश्व जनमत को जागरूक बनाने का प्रयास भी तेज होते जा रहे है। सामाजिक पर्यावरण जो समाज वैज्ञानिकों का प्रारम्भ से ही मूल विषय रहा है, जीव विज्ञानियों की धरोहर बन गया। समाजविदों एवं भूगोलविदों ने पुर्नरावलोकन के पश्चात 1970 के बाद पर्यावरण की ओर फिर से पलट कर देखना प्रारम्भ कर दिया। समाज में पर्यावरण के अध्ययन को महत्व इसीलिए भी दिया जाता रहा है, क्योंकि पर्यावरण ही वह स्थिति है, जो समाज और व्यक्ति को एक विशेष स्वरूप प्रदान करती है, जो महिलाओं के भी व्यवहारों, संस्कृति, सभ्यता, अचार–विचार, खान–पान, रीति–रिवाज, कला आदि को एक बड़ी सीमा तक प्रभावित करती है।

पर्यावरणीय समस्यायें आज मानव के लिए चिन्ता का विषय बन गयी है। क्योंकि यह किसी स्थान विशेष या देश–विदेश की समस्या न होकर पूरे विश्व की समस्या है, यह मानव चिन्ता का एक मुख्य विषय है। भौगोलिक दृष्टि से पर्यावरण के अध्ययन में मोटे तौर पर स्थल मण्डल, जल मण्डल, वायुमण्डल तथा जैव मण्डल का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में पर्यावरण का मानव पर प्रभाव, तथा मानव का पर्यावरण पर प्रभाव आदि का विश्लेषण एवं मूल्यांकन किया जाता है। किन्तु जब हम समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से पर्यावरण का अध्ययन करते है तो पर्यावरण के घटक, (स्थल मण्डल, जल मण्डल,

वायु मण्डल तथा जैव मण्डल) पर्यावरण के प्रकारों, पर्यावरण असन्तुलन, पर्यावरणीय समस्यायें, पर्यावरण एवं पारिस्थितिकीय, पर्यावरण तथा समाज पर्यावरण तथा जनसंख्या, पर्यावरण का मानव पर प्रभाव तथा मानव का पर्यावरण पर प्रभाव आदि का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।

वर्तमान समय में रेडियों धर्मी प्रदूषण सम्पूर्ण विश्व के लिए चुनौती बन गया है। इसमें उत्पन्न प्रदूषण पर नियंत्रण पाना बहुत जटिल है, क्योंकि एक बार रेडियोएक्टिव किरणें उत्पन्न हो जायें तो इसे नियंत्रित करना सम्भव नही है, परमाणु परीक्षणो एवं विस्फोटो से एक तरह मानव जीवन को नुकसान होती है तो दूसरी तरफ जीव–जन्तु भी इसके घातक प्रभाव से बच नही पाते हैं। परमाणु परीक्षण मानव जीवन एवं स्वास्थ्य के लिए घातक है क्योंकि इनके विस्फोटों से अल्फा, गामा और बीटा जैसी भयानंक हानिकारक किरणें निकलती हैं जिसका प्रभाव पीढ़ी दर पीढ़ी पड़ता है। लेकिन अफसोस इस बात का है कि विश्व के शक्तिशाली देश अन्य देशों पर अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए परमाणु केन्द्रों की स्थापना कर रहे हैं। परमाणु विनाश का भण्डार हैं, जो पृथ्वी, जल और वायु को दूषित करने की क्षमता रखते हैं।

स्वतंत्रता के बाद भारत को राजनैतिक आजादी तो मिल गयी परन्तु सामाजिक व आर्थिक आजादी के लिये उसे कई सोपान अभी भी तय करने होगें जो बगैर जन सहयोग के प्राप्त नही हो सकते हैं। साथ ही जब तक भारत की कथनी व करनी एक नही होगी,हम आजादी व विकास के सही अर्थ नही पा सकेंगें। हर भारतीय को आज व्यक्तिगत लाभ को त्यागकर आध्यात्मिक लाभ देने वाले यज्ञ जैसे पुनीत कार्य को अविलम्ब करना होगा।

यह जगत केवल मनुष्यों का ही नही बल्कि समस्त प्राणियों का जगत है। पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश को पंचभूत माना गया है जबकि भगवान महावीर ने आकाश को छोड़ सबको जीव माना है। उनके अनुसार समूचा भू–मण्डल जीवों से भरा पड़ा है इस प्रकार इस समूचे जीव जगत को हम एक प्राणी समुदाय कह सकते है। समुदाय का अपना एक सिद्वान्त होता है। अपना एक आदर्श होता है और यह सिद्धान्त और आदर्श मात्र परम्पररता पर अवलम्बित है। जैन मत के अनुसार इसे 'परस्परोग्रहों जीवानाम' सिद्धान्त सबसे महत्वपूर्ण और प्रासंगिक है। शुभुपटवां (1998) आज जिस पर्यावरण असन्तुलन की चिन्ता समूचे विश्व को सता रही है उसके मूल में परस्परोपग्रहों जीवानाम् का खण्डित हो जाना है। इसके खण्डित होने का मूल कारण बढ़ती हुई तृष्णा और असंयम है। पिछले दो सौ सालों में जिस प्रकार के औद्योगिक विकास की लहर चली है, विज्ञान और प्रौद्योगिकी ने जिस प्रकार से अपना शिकंजा कसा है। कुदरत से अधिक से अधिक खींचकर भौतिक साधन सम्पत्ति जितनी बढ़ाई जा सके उतनी बढ़ाने की जो योजनायें चल निकली है–वह पर्यावरण असंतुलन का मूल है। भारत के राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा है कि 'यह धरती सबका पेट भर सकती है,पर किसी एक का भी लालच पूरा नही कर सकती'। महावीर स्वामी कहते हैं कि 'इच्छा हु आगाससभा अणंतियां' इच्छा आकाश के सामान अनन्त है। अनन्त को पाना है तो विनाश अवश्य है।

जल, जंगल और जमीन ये पर्यावरण के तीन मुख्य आधार हैं। जैन सिद्धान्त और दर्शन में इनके संरक्षण, पोषण और संयम पूर्वक उपभोग का व्यापक और विविध रूपों में उल्लेख है लेकिन आज का जगत जो अत्यधिक वैज्ञानिक और यंत्रीकृत है। इन सिद्धान्तों को विस्मृत कर रहा है। इसमें कोई दो राय नहीं है कि विगत 70 वर्षो में जनसंख्या वृद्धि पर रोक एवं पर्यावरण सन्तुलन पर राष्ट्रीय स्तर पर विचार तो हुआ है लेकिन इसका कारगर व प्रभावी प्रस्तुतीकरण करने में हम आज तक असफल रहे हैं। और प्राकृतिक

संपदा के हरण व दोहन के लिये समाज जिम्मेदार है। पर्यावरण के असंतुलन के लिये हम सभी दोषी हैं। प्रत्येक व्यक्ति को अपने नैतिक कर्तव्यों का पालन करते हुये वन अपराधों की बढ़ती संख्या को रोकने का प्रयास करना चाहिये। वृक्षों की अवैध कटाई करने वालों को दण्डित होने का भी भय होना चाहिये साथ ही जो वृक्ष लगाये उन्हें पुरस्कृत भी करना चाहिये । नीम, पीपल, तुलसी, आंवला जैसे सर्वाधिक उपयोगी वृक्षों को लगाने पर जोर देना होगा।

पर्यावरण सन्तुलन के लिये कुल भू भाग के क्षेत्रफल का 33 प्रतिशत वृक्ष वनस्पतियों से ढका होना चाहिये। कभी भारत देश की 70 प्रतिशत भूमि वनों से आच्छादित थी। कटते–कटते वह मात्र 22 प्रतिशत अवशेष बची है। अनिवार्य पर्यावरण सन्तुलन सीमा से भी यह 11 प्रतिशत कम है। दूसरे प्रगतिशील देशों ने कड़ाई के साथ वन संपदा को नष्ट करने पर रोक लगा दी है। फिनलैण्ड में अब भी 66 प्रतिशत भूमि में वन हैं। जापान जैसे औद्योगिक राष्ट्र जहाँ कि ईधन की अधिक आवश्यकता उद्योगों के लिये पड़ती है में भी 62 प्रतिशत क्षेत्रफल पेड़ पौधों से हरा–भरा है। रूस के कुल क्षेत्रफल के 34 प्रतिशत तथा अमरीका के 33 प्रतिशत भाग में वन हैं। सर्वाधिक अदूरदर्शिता का परिचय भारत देशवासियों ने दिया है। अंधाधुंध वृक्षों की कटाई के कारण असन्तुलन की स्थिति उत्पन्न हो गयी है। इस स्थिति को कड़ाई से रोकना होगा तथा सन्तुलन के लिये वृक्षारोपण जैसे पुनीत कार्य को करना होगा और यदि हम धरती को धरोहर मानकर इसे अगली पीढ़ी को जस की तस सौंपने को आतुर हैं तो हमें एक नई रीति और बर्ताव की ओर उन्मुख होना होगा। बापू ने कहा है तुम्हारे ज्ञान की कीमत तुम्हारे कामों से होगी। पुस्तकें मस्तिष्क में भरने के बजाय उस ज्ञान को व्यवहार में उतारने पर ही उसका मूल्य होता है।

आज पर्यावरण संरक्षण वर्तमान युग की सर्वोपरि आवश्यकता है। सरकारी मशीनरी एवं सामाजिक संस्थाओं के अतिरिक्त जनसंचार क्रान्ति के विभिन्न माध्यमों के द्वारा लोगों के हदय में पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता उत्पन्न कराने की आवश्यकता है। यद्यपि विभिन्न समाचार पत्र अपने समाचारों व लेखों के द्वारा इस दिशा में प्रयास करते रहते हैं। दृश्य एवं श्रव्य माध्यम होने के कारण दूरदर्शन आम जन –मानस को अधिक प्रभावित करता है। दूरदर्शन प्रदूषण नियन्त्रण बोर्ड द्वारा प्रायोजित विज्ञापनों एवं प्रदूषण संरक्षण सम्बन्धी ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों के द्वारा जन –मानस को प्रेरित करता रहता है। इसके अतिरिक्त जन–संचार माध्यम आकाशवाणी भी अपने प्रयासों से इस दिशा में सार्थक प्रयास कर रहा है। पर्यावरण को दूषित एवं प्राकृतिक संसाधनों का अनावश्यक दोहन, वातावरण को दूषित करने वाला आम जन –मानस ही है। अतः जन – मानस को व्यक्तिगत स्वार्थ की भावना का त्याग कर सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय की भावना से प्रेरित होकर पर्यावरण संरक्षण के लिये पूर्ण मनोयोग से कार्य करना चाहिये ।

पर्यावरण संरक्षण तभी संभव हो पायेगा जब पर्यावरण संबंधी जन चेतना का ऐसा महायज्ञ प्रारम्भ होगा जिसके फलस्वरूप प्राकृतिक संरक्षण, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक आदि विभिन्न पहलुओं का संरक्षण संभव हो। संतुलित पर्यावरण को बनायें रखने के लिये प्रभावशील कार्यवाही हेतु राज्य स्तरीय एवं अंतर्राज्यस्तरीय स्तर पर लोगों में अवबोध पैदा करने की आवश्यकता है। पर्यावरण संरक्षण का मूलमंत्र है स्वस्थ पर्यावरण। पर्यावरण संरक्षण की नीति विशेष रूप से तीन स्तरीय होनी चाहिये– स्थानीय स्तरीय, राष्ट्रीय स्तरीय, अंतर्राष्टीय स्तरीय।

निष्कर्षतः मैं कह सकती हैं कि पर्यावरण आज मानव जीवन के अस्तित्व के लिए अति प्रासंगिक विषय बन गया है। प्राकृतिक पर्यावरण

में असंतुलित परिवर्तन, तापमान का बढ़ना, जल संकट खाद्यान्न संकट आदि ऐसे सामाजिक–आर्थिक एवं मानवीय पक्ष हैं जिस पर सार्थक पहल, बहस एवं गतिशील आन्दोलन की जरूरत है ।प्राकृतिक संसाधनों का दोहन निश्चित रूप से उचित अनुपात में करने की जरूरत है। ऊर्जा संकट, पृथ्वी के तापमान में निरन्तर वृद्धि, मानसून में असंतुलन भारी परिवर्तन कुछ ऐसे मौलिक प्रश्न हैं जिस पर सम्पूर्ण विश्व को व्यापक दृष्टिकोण एवं कार्य योजना बनाने की जरूरत है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- सिंह, सविन्द्र (2005) पर्यावरण भूगोल, प्रयाग पुस्तक भवन ,इलाहाबाद ।
- सिंह, जगदीश (2001) पर्यावरण एवं संविकास, ज्ञानोदय प्रकाशन दाउदपुर, गोरखपुर ।
- प्रसाद, गायत्री (2006) शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद ।
- विभिन्न समाचार पत्रों में समय –समय पर प्रकाशित पर्यावरणीय लेख
- कुरूक्षेत्र जनवरी 2008 ।
- योजना जून 2008 ।
- भूगोल और आप पत्रिका, जुलाई–अगस्त 2009 ।
- पर्यावरण अतिरिक्ताँक–प्रतियोगिता दर्पण 2009
- ई0 जे0 रॉस : सोसियोलॉजी एण्ड सोशल प्राव्लम्स,पृष्ठ.35।
- पी0 जिस्बर्ट : फन्डामेन्टलस ऑफ सोसियोलोजी।
- मैकाइवर एण्ड पेज : सोसाइटी,पृष्ठ 79 मैकाइवर एण्ड पेज : सोसाइटी,पृष्ठ 188